
The Gazette of India

चश्राचारण

EXTRAORDINARY

भाग **П---खण्य 3---उपखण्ड** (ii)

PART II-Section 3-Sub-section (il)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

€0 117

मई बिल्ली, जनिवार, मार्च 29, 1975/चेश्र 8, 1897

No. 117

NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 29, 1975/CHATTRA 19, 1897

इस भाग में भिन्न पुष्ठ संख्या वी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF LABOUR ORDER

New Delhi, the 28th March 1975

S.O. 157(E).—Whereas in the opinion of the Central Government, it is necessary and expedient so to do for maintaining supplies and services essential to the life of the community;

And whereas any strike in the Rajasthan Atomic Power Project at Kotah would projudicially affect the maintenance of supplies and services essential to the life of the community, it is necessary and expedient to prevent any strike in the said project;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by rule 118 of the Defence of India Rules, 1971, the Central Government hereby prohibits, with immediate effect, any strike in connection with any industrial dispute in the said project for a period of six months from the date of publication of this Order.

[No. F. S-42025/28/74-I.R.I]

D. BANDYOPADHYAY, It. Sccy.

क्षम संबक्ष्य

आ देश

नई दिल्ली, 28 मार्च 1975

जा का 157(म्र).--यतः केन्द्रीय सरकार की राय में समुदाय के जीवन के लिए मायश्यकः क्रक्रम भीर से अप् बनाए रखने के लिए ऐक्षा करना श्रावश्यक ग्रीर समीचीन है;

कौर यतः कोटा स्थित राजस्थान प्रमाणु प्रक्ति प्रायोजना में कोई हड़ताल समुदाय के जीवन के लिए प्रावश्यक प्रदाय श्रीर सेवाएं बनाए रखने के लिए प्रतिकृत प्रभाव | डालेगी, इसिंकए उता प्रायोगित में कि तो हड़ताल को रोकना श्रावश्यक श्रीर सभीचीन है;

भतः, श्रवं, भारत रक्षा नियम, 1971 के नियम 118 द्वारा प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग नरते हुए, केन्द्रीय सरकार उक्त प्रायोजना में किसी श्रीद्योगिक विवाद से सम्बन्धित हड़ताल को इस अदिश के प्रकाशन की तारीज ते छः मास की अवधि के लिए तत्काल प्रभाव से प्रतिषिद्ध करती है।

[सं॰ फा॰ 42025/28/74-एल॰ प्रार॰ I] डी॰ बन्धोपाध्याय, संयुक्त सन्निय ।